-=:|| आनंद के लुटे खजाने, भाई सतगुरु के दरबार में ||:=-

सतगुरु के दरबार में, भाई धन गुरु के दरबार में |
आनंद के लुटे खजाने, भाई सतगुरु के दरबार में ||

धन में सुख: को देखने वालो, धनवालो से पूछ लो |
एक पल कि फुर्सत नाही, भाई जीवन कार्य व्यहार में || १ ||

कोठी बंगले कारो की भाई, कमी नहीं उसके पास में |
वो भी यूं कहते है, हम सुखी नहीं संसार में || २ ||

भाई बंधू कुटुंब कबीला, इतना बड़ा परिवार है |
वो देखे रोज कचहरी, भाई आपस कि तकरार में || ३ ||

न सुख: घर में रहण से, भाई न सुख: बन में जाणे से |
गुरु भोलानाथ समझावै, सुख है आतम विस्तार में || ४ ||

जय शंकर की....
जय श्री नाथजी की.